

राँची, सोमवार

16 से 31 अक्टूबर 2022
पेज : 04, मूल्य : निःशुल्क
वर्ष : 01, अंक : 07
झारखंड संस्करण
UDYAM-JH-19-0000800

khorthajharnews@gmail.com

एक नजर में

आस्था का महापर्व



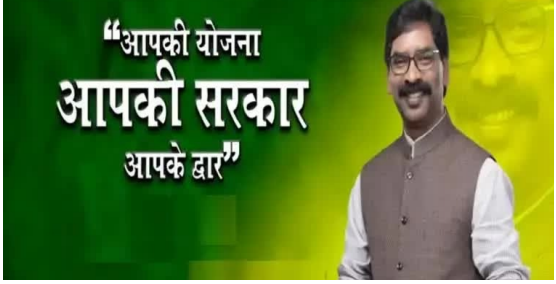
आस्था का महापर्व छठ उदयीमान सूर्य के अर्ध के साथ समाप्त हो गया। छठव्रतियों ने इस चार दिवसीय छठ महापर्व के दौरान 36 घंटे का निर्जला उपवास रखकर भगवान भास्कर की उपासना की। इस महापर्व को लेकर बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश समेत भारत के अन्य राज्यों और विदेशों में भी उत्साह नजर आया। इस दौरान छठ पूजा की गीतों ने समां बांधा। बता दें, इस साल 28 अक्टूबर को नहाय खाय के साथ छठ की शुरुआत हुई, 29 अक्टूबर को खरना, 30 तारीख को अस्ताचलगामी और 31 अक्टूबर को उदयीमान सूर्य को अर्घ्य दिया गया।

राजधानी की AQI, चिंताजनक स्थिति में आई



इन दिनों राजधानी दिल्ली की वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) चिंताजनक स्थिति में है। और दिन ब दिन प्रदूषण का यह ग्राफ लगातार बढ़ता जा रहा है। प्रदूषण का यह आलम दिल्लीवासियों को बीमार बना रही है। बता दें, दिल्ली की वायु गुणवत्ता सूचकांक इन दिनों 345 के पार है, जो कि बेहद खराब श्रेणी के अंतर्गत आता है और प्रदूषण का ये स्तर स्वस्थ लोगों की सेहत पर भी भयावह असर डालता है।दीपावली पर प्रदूषण को कंट्रोल करने के लिए ही इस बार पटाखे बैन किए गए थे, लेकिन कम तापमान और शांत हवा और पंजाब में पराली जलाने की घटनाओं की वजह से वायु प्रदूषण दिन-प्रति-दिन दिल्ली में बढ़ रही है. अब ऐसे में वहां के लोगों को सांस लेना भी मुश्किल हो रहा है और आंखों में जलन के सामान्य लक्षण दिख रहे है.

आपकी योजना, आपके सरकार, आपके द्वार



हेमंत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना “आपकी योजना, आपके सरकार, आपके द्वार” का दूसरा चरण 01 नवंबर से 14 नवंबर तक राज्य के विभिन्न पंचायतों में आयोजित किया जाएगा। इससे पहले “आपकी योजना, आपके सरकार, आपके द्वार” का पहला चरण 12 अक्टूबर से 22 अक्टूबर तक राज्य के विभिन्न पंचायतों में आयोजित की गई। इसके तहत लाखों ग्रामीणों के अपनी समस्याएं सरकार के समक्ष रखी और इन समस्याओं पर संबंधित विभागों ने कार्यवाई करते हुए निष्पादन करने का कार्य किय। राज्य की सरकार का लक्ष्य इस योजना के तहत अंतिम व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाना है।

न्यूजीलैंड और बांग्लादेश सीरीज के लिए टीम इंडिया का ऐलान



ऑस्ट्रेलिया में जारी टी-20 वर्ल्ड कप के खत्म होने के तुरंत बाद भारतीय टीम न्यूजीलैंड का दौरा करेगी। न्यूजीलैंड के खिलाफ टी-20 सीरीज के लिए अखिल भारतीय सीनियर चयन समिति ने हार्दिक पांड्या को कमान सौंपी है। टीम के नियमित कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली को आराम दिया गया है। वहीं सलामी बल्लेबाज केएल राहुल भी इस दौरे का हिस्सा नहीं रहेंगे। टी-20 विश्व कप में भारत के लिए फि. निशार की भूमिका निभाने वाले अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक और अश्विन को टीम में शामिल नहीं किया गया है।आपको बता दें, टी-20 में हार्दिक पांड्या कप्तानी करेंगे. वहीं वनडे सीरीज की कमान शिखर धवन के हाथों रहेगी. और इस दौरान ऋषभ पंत दोनों सीरीज में उप- कप्तान होंगे

झारखंड का हिंदी-खोरठा पाक्षिक पत्र



आपन माटी आपन देश

झारखंड न्यूज

डिजिटल संस्करण

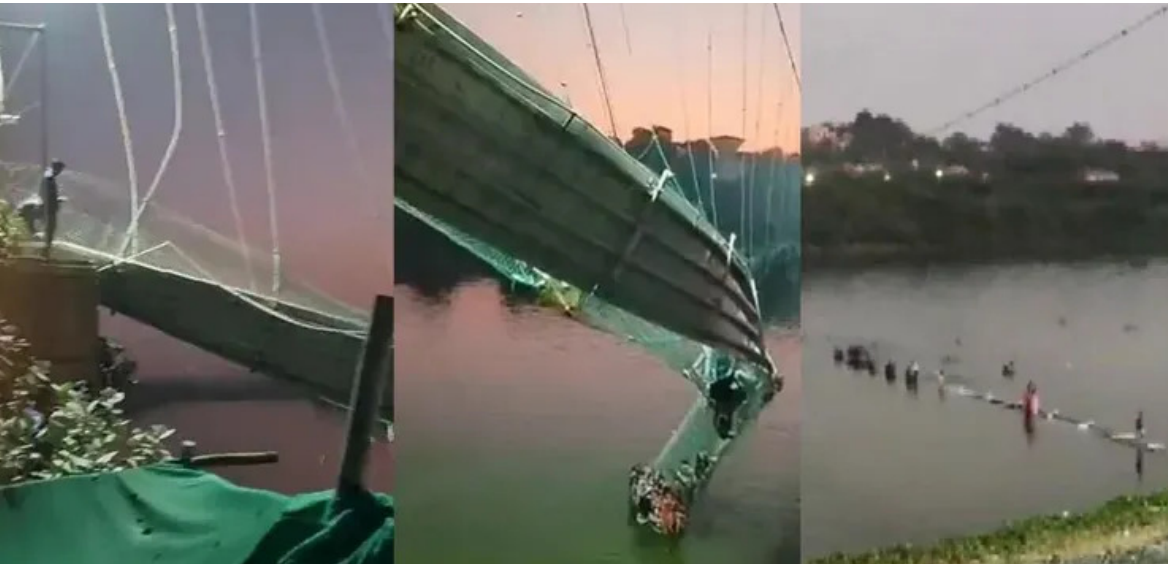
मोरबी के ‘केबल ब्रिज’ पर दिखा ‘मौत’ का भयावह मंजर

प्रणय प्रबोध

पूरा देश आस्था का महापर्व छठ के अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देने में लगा था. गुजरात के मोरबी जिला में छठ व्रतधारी मच्छु नदी में भगवान सूर्य की आराधना कर रहे थे। इसी बीच एक ऐसा भयावह नजारा आंखों के सामने होता है, जिसे देख लोगों की आंखें फटी की फटी रह गयी, दिल सहम सा गया, चारों ओर सन्नाटा पसर गया और कानों को अगर कोई आवाज सुनाई देती, तो वह थी ‘बचाव-बचाव’ की आवाज. चारों ओर से सिर्फ यही आवाजें कानों को कुरेद रही थी. क्योंकि ये महज एक-दो या पांच लोगों की आवाजें नहीं। बल्कि चार सौ से भी अधिक लोगों की आवाजें थी. जो मच्छु नदी पर बने ‘केबल ब्रिज’ पर चढ़कर महापर्व का नजारा देख रहे थे।

और टूट गया पुल
मौत से पहले न तो सपने आते हैं और न ही किसी ने मौत के पहले उसका पुर्वानुमान किया है. कौन, कब, कैसे काल की गाल में समा जाए, कोई नहीं जानता. ठीक ऐसा ही विमलस नजारा गुजरात के मोरबी जिले से सामने आया है. ‘केबल ब्रिज’ के ऊपर चढ़कर स्थानीय लोग महापर्व छठ का आनंद ले रहे थे. इसी बीच पुल तेज गति से हिलने लगता है. पुल पर खड़े लोग रस्सी के सहारे खुद को बचाने की कोशिश करते हैं. लेकिन क्षमता से अधिक भार होने के कारण पुल लोगों को संभाल नहीं पाती और बीच से टूट जाती है. पुल पर सवार करीब 400 से 500 लोग क्षण भर में जलमग्न हो जाते हैं. कुछ लोगों ने तो तैरकर अपनी जान बचायी. लेकिन जिन्हें तैरना नहीं आता, वो नदी के दलदल में समाते चले गए. लेख लिखे जाने तक 140 से अधिक लोगों के मौत की पुष्टि हुई. वहीं 70 घायलों का इलाज अस्पताल में जारी है, जिनमें से कई लोगों की स्थिति नाजुक बनी हुई है. वैसे तो आंकेडों के मुताबिक 50 से अधिक लोग अब भी लापता है. लेकिन हकीकत क्या है. किसी को पता नहीं।

राहत और बचाव कार्य
कोई भी घटना तभी घटती है। जब लोग असावधानी बरतते हैं। चाहे वह लापरवाही प्रशासनिक तंत्र के माध्यम से हो या फिर आम नागरिकों की ओर से लेकिन असावधानी ही मौत को आमंत्रण देती ह। हालांकि घटना की सूचना मिलते ही गुजरात सरकार के नेता, मंत्री और प्रशासनिक पदाधिकारी हरकत में नजर आए. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह ने गुजरात सरकार को हरसंभव मदद का आश्वासन दिया। जिसके बाद



SDRF, NDRF, IN, तटरक्षक बल, भीड़ प्रबंधन, नागरिक प्रशासन और पुलिस की सहायता के लिए कुल तीन सौ जवानों की तैनाती की गयी है।
मानवजनित आपदा या विपदा ?
आम लोगों की धारणा के मुताबिक यह महज एक विपदा थी. जो अचानक हुआ।. मणि मंदिर के पास करीब 143 साल पहले बना पुल महज 13 सेकेंड में धराशायी हो गया। पुल के टूटने का 05 सेकंड का मंजर इतना भयावह था कि देखते ही देखते लोग पुल से सीधे नीचे नदी में गिर गए। इनमें से कुछ लोगों ने टूटे हुए पुल को किसी तरह पकड़कर अपनी जान बचाई। तो कुछ लोग तैरकर बाहर निकले। इस हादसे के बाद कई तरह के सवाल खड़े हो रहे हैं। दरअसल 1880 में निर्मित केबल ब्रिज, जिसका हाल ही में 2 करोड़ की लागत से जीर्णोद्धार किया गया था। जीर्णोद्धार के बाद नए साल के मौके पर कुछ दिनों पहले ही आम लोगों के लिए खोला गया था और जीर्णोद्धार के कुछ दिनों बाद हादसा होना कई सवाल

खड़े कर रहा है। पर्यटन की दृष्टि से जीर्णोद्धार किए गए पुल पर पर्यटकों या लोगों को जाने के लिए टिकट कटाने पड़ रहे थे। 13 साल तक के बच्चों को 12 रुपए देने पड़ रहे थे और 13 साल से ऊपर के लोगों से 18 रुपए वसूले जाने की बात सामने आयी है। लेकिन महज 100 लोगों की क्षमता वाली पुल पर चढ़ने के लिए 400 से 500 लोगों को टिकट किसने और किसके कहने पर दिया? यह बड़ा सवाल बनता है।
पुल का इतिहास
143 साल पुरना यह पुल 765 फुट लंबा और 4 फुट चौड़ा था। इंजीनियर का चमत्कार कहे जाने वाले इस पुल का उद्घाटन 1879 में किया गया था। मोरबा के इस केबल ब्रिज को राजा वघजी रावजी ने बनवाया था। जिन्होंने सन् 1922 तक मोरबी पर शासन किया। ऐतिहासिक मान्यताओं के मुताबिक राजा ने दरबारगढ़ पैलेस को नजरबाग पैलेस से जोड़ने के लिए बनाया था। लेकिन 300 किलोमीटर लंबी मच्छु नदी पर बना यह पुल

भारतीय ज्ञान परंपरा और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति



रांची : शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व और व्यवहार का परिमार्जन कर उनके भीतर अच्छे विचारों का निर्माण करती है। साथ ही जीवन के मार्ग को प्रशस्त करती है। बेहतर समाज के निर्माण में सुशिक्षित नागरिक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। वर्तमान समय की सबसे बड़ी शक्ति ज्ञान ही है। श्रज्ञानर शब्द देखने में जितना छोटा है, उतनी ही व्यापकता लिए हुए है। ज्ञान का क्षेत्र विशाल है। यह जीवन-पर्यंत चलता है। वर्तमान समय में वही देश सबसे कामयाब है, जिसके पास ज्ञान की अदभुत शक्ति है। यह ज्ञान ही है, जो मनुष्य को अन्य जीव-जन्तुओं से श्रेष्ठ बनाता है। भारत की प्राचीनकालीन शिक्षा व्यवस्था देश में ही नहीं, समूचे विश्व में भी प्रसिद्ध थी। चरित्र निर्माण, आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य पर आधारित शिक्षा प्रणाली की ख्याति चारों ओर फैली हुई थी । चीन, जापान, तिब्बत और लंका सहित कई देशों से यहां शिक्षार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते थे। अलग-अलग विषयों के विशेषज्ञ आचार्यों के कारण नालन्दा, तक्षशिला और विक्रमशिला विश्वविद्यालय विश्व में सुविख्यात थे ।

इस तरह प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था अपने उद्देश्यों और व्यावहारिकता के कारण संसार में अनूठी थी। भारत के पास बौद्धिक अनुसंधान और मूल ग्रंथों के धरोहर की एक अत्यंत समृद्ध परंपरा रही है, जो कि सदियों पुरानी है। भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म, भोग और त्याग का अदभुत समन्वय है। ‘ऋग्वेद’ के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यों पर केंद्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देती थी। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा प्रणाली ज्ञान, परंपरा और प्रथाएं मानवता को प्रोत्साहित करती थी। भारत के तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, बल्लभी, उज्जैन, काशी आदि विश्व प्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केंद्र थे। यहां कई देशों के शिक्षार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते थे। वैदिक काल में महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय

प्रसिद्धि थी, जिसमें मैत्रीय, रिंतभरा, अपाला, गार्गी और लोपामुद्रा आदि जैसे नाम प्रमुख थे। बोधायन, कात्यायन, आर्यभट्ट, चरक, कणाद, वाराहमिहिर, नगार्जुन, अगस्त, भर्तृहरि, शंकराचार्य, स्वामी विवेकानंद जैसे अनेक महापुरुषों ने भरतभूमि पर जन्म लेकर अपनी प्रतिभा और मेधा से विश्व में भारतीय ज्ञान परंपरा की समृद्धि में अतुलनीय योगदान दिया है। प्राचीन काल से ही भारत उच्च मानवीय मूल्यों एवं विशिष्ट वैज्ञानिक परंपराओं का देश रहा है। भारत की ऐसी संस्कृति रही है कि भारत ने दुनिया को अलग-अलग देश या भू-भाग के रूप में माना ही नहीं है।
अयं निजः परो वेति,गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु, वसुधैव कुटुम्बकम्।
महाउपनिषद् के इस सिद्धांत के आधार पर सारी दुनिया को एक परिवार के रूप में मान्यता देने वाला एकमात्र देश भारत है। यह अलग बात है कि पाश्चात्य सभ्यता की आपाधापी में हम भी गलती से यह समझने लगे कि यह सभ्यता भौतिकवाद पर टिकी है, ना कि ज्ञान और अध्यात्म पर।

वर्तमान समय में पश्चिमी सभ्यता वाले सभी देश भारतीय संस्कृति और सभ्यता को अपनाने और जानने पर जोर देने लगे हैं। वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों और यहां की जीवन शैली को जानने के लिए अपने यहां कई विभाग से लेकर शोध संस्थाओं की भी स्थापना करने लगे हैं। भारत की परंपराओं को विश्व अपना रहा है। अब हमें और हमारी भावी पीढ़ियों को भी भारत की प्राचीन मूल्य को यथोचित महत्व देना होगा। इसके लिए आंतरिक ज्ञान, गुण, शक्ति एवं आदर्शों को ठीक रूप से पहचानना एवं सही दिशा प्रदान करना होगा। प्राचीन भारत ने दर्शन, ध्वन्यात्मक भाषा विज्ञान, अनुष्ठान, व्याकरण, खगोल विज्ञान, अर्थशास्त्र, सांख्य सिद्धांत, तर्क, जीवन विज्ञान, आयुर्वेद, ज्योतिष और संगीत जैसे विभिन्न मानव कल्याणकारी क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित करके संपूर्ण मानव जाति की उन्नति में अत्यधिक योगदान दिया है। प्राचीन भारतीयों की आविष्कृत विचारों और तकनीकों का आधु. निक विज्ञान और प्रौद्योगिकी की मूल आधार मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

मौलिक परंपराओं से युक्त भारतीय शिक्षा
भारत की ज्ञान परंपरा का अतीत प्राचीन एवं गौरवपूर्ण रहा है। भारत सदैव ज्ञान विज्ञान और अध्यात्म का केंद्र रहा है। भारत के लोग मौत से भी नहीं डरने वाले थे,

यहां झूठ बोलने की परंपरा नहीं थी, यहां के ज्ञान की समृद्ध परंपरा विश्व की सर्वश्रेष्ठ परंपरा थी। केवल एक कौशल को संकीर्णता के साथ देखनेवाले इंग्लिश एजुकेशन के आधार पर एंलॉयमेंट ही भारतीय ज्ञान परंपरा को विकृत करने का कार्य किया। हम विदेशी ज्ञान आधारित विश्वविद्यालयों का केवल अंधानुकरण कर कदापि भारतीय जीवन मूल्यों की शिक्षा की कल्पना नहीं कर सकते। भारत की शिक्षा मौलिक परंपराओं से युक्त थी।

मैकॉले शिक्षा पद्धति का प्रभाव
भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ें इतनी मजबूत और प्रभावी थी कि लॉर्ड मैकॉले को ये आभास हो गया था कि भारतीयों को पूर्णरूपेण गुलाम बनाना संभव नहीं है। इसलिए उसने शिक्षा व्यवस्था पर प्रहार किया और पुरातन ज्ञान परंपरा के स्थान पर अंग्रेजी शिक्षा की नयी प्रणाली थोप दी। इसके तहत सम्पूर्ण मानव बनाने वाली या भारत के सांस्कृतिक उत्थान वाली व्यवस्था को रोकने का प्रयास था। पूरी व्यवस्था में येन केन प्रकारेण छद्म अंग्रेजी वाहक तात्कालिक योग्यताओं के बल पर भारतीयों के बीच नौ. करी के लिए स्पर्द्धा का निर्माण करना था। 64 कला-कौशल सिखाने के साथ मानवीय गुणों और मूल्यों का समावेश कर पूर्ण मानव की परिकल्पना हमारे सामने गौण हो गए। हम शिक्षा ज्ञान परंपरा से दुनिया के सिरमौर थे, देश विदेश के कितने विद्यार्थी भारत के विभिन्न केंद्रों में जिस ज्ञान को ग्रहण करने आते थे, जिस ज्ञान से सहज रूप से अपनी समस्याओं को हल करने की क्षमता आती थी, जिस ज्ञान से नेतृत्व करने की क्षमता आती थी और जिसमें घर, परिवार, समाज, राष्ट्र और पूरी दुनिया को एक सूत्र में जोड़कर रखने की बात थी; हम उसे एकपक्षीय बनाकर संकीर्ण लक्ष्य में ढालने के लिए विवश हो गए। सन 1835 की मैकॉले द्वारा प्रदत्त शिक्षा व्यवस्था के कारण उत्पन्न उस रस में हम आज तक दौड़ रहे हैं। सबसे बड़ी बात कि नौकरी के योग्य बनानेवाली समझकर हम जिस अंग्रेजी शिक्षा को ढो रहे थे वो आज की चुनौतियों के सामने नौकरी में भी धराशायी हो जाती है। अपने सांस्कृतिक आधार और विरासत को नही समझने के कारण नौकरी में लगे हुए अधिकांश व्यक्ति केवल अनुसरण करते हैं उदाहरण के लिए शिक्षा में पाश्चात्य शोध और पद्धतियां भारतीय शिक्षा के मूल में रहती हैं। अनुसरण से कोई राष्ट्र पीछे रह सकता है किन्तु रस में आगे रहने के लिए तो भारत को अपनी संस्कृति, शक्ति

पल भर में धराशायी हो गया.
घड़ी बनाने वाली कंपनी को मिला था जीर्णोद्धार का ठेका
करोड़ों रुपए की लागत से जिस पुल का जीर्णोद्धार हुआ। वह महज 13 सेकेंड में धराशायी हो गया। फिर जीर्णोद्धार का काम जिस कंपनी को मिला, उसकी कार्यप्रणाली पर सवाल उठना लाजमी है। पुल को रेनोवेट करने का काम अजंता मैन्यूफैक्चरिंग (ओरेवा ग्रुप) को मिला था। जो कि दीवार घड़ी बनाने के लिए मशहूर है। लेकिन इसका काम बीते सात माह से बंद था और 26 अक्टूबर को इसे दोबारा खोला गया था। ये ठेका किसी पांचाल नाम के मालिकाना हक वाली देवप्रकाश सॉल्यूशन को दिया गया था। यानि अजंता मैन्यूफैक्चरिंग ने पहले कॉन्ट्रैक्ट लिया और फिर मरम्मत के काम का जिम्मा देवप्रकाश सॉल्यूशन को सौंप दिया।

SIT का गठन

गृह मंत्रालय ने मामले में त्वरित संज्ञान लेते हुए पांच सदस्यीय SIT (Special Investigation Team) का गठन किया है। वहीं गुजरात के गृह मंत्री हर्ष मंत्री ने भी त्वरित जांच के आदेश दिए हैं और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की बात कही है। इस मामले में पुलिस ने नौ लोगों को गिरफ्तार भी किया है। जिनसे पृछताछ की जा रही ह।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का दौरा

गुजरात के बनासकांठा में लौह पुरुष की जयंती के अवसर पर संबोधन के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भावुक नजर आए। उन्होंने कहा कि कर्तव्य भी जरूरी है। इसलिए वो भारत के पूर्व उप प्रधानमंत्री और लौहपुरुष के नाम से जाने-जाने वाले महापुरुष की जयंती मनाने आए हैं। लेकिन उनका पूरा ध्यान मोरबी में लगा है। यह कहते हुए वो भावुक नजर आए। प्रधानमंत्री ने 01 नवंबर को मोरबी के घटनास्थल का दौरा करने की बात कही। वहीं केन्द्रीय गृह मंत्री, सोनिया गांधी, राहुल गांधी, विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों और नेताओं ने मृतकों के प्रति गहरी शोक-संवेदना व्यक्त की है। साथ ही केन्द्र और राज्य सरकार ने पीड़ित परिवार को मुआवजा राशि देने की घोषणा की है।

लेकिन सवाल रह जाता है...

तमाम तथ्य आंखों के सामने हैं। लेकिन फिर भी एक सवाल मन में घर कर जाता है कि आखिर इस हादसे का जिम्मेदार कौन? क्या मानव जीवन की कोई अहमियत नहीं? क्या आम नागरिकों की कोई हस्ती नहीं? ऐसे सवाल उठने भी लाजमी हैं. क्योंकि आए दिन ऐसी घटनाओं को देखते और सुनते रहते हैं।

और ऊर्जा में सामंजस्य स्थापित कर नवीनता लानी होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में जैसा लक्ष्य रखा गया है वैसी अर्थात सांस्कृतिक विरासत और संसाधन के ज्ञान के साथ नवीन शोध को पुनर्जीवित करनेवाली शिक्षा व्यवस्था चाहिए। नवाचार तो अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव में जैसे हम भूल ही गए। अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था से उत्पन्न लोग जो भारतीय संस्कृति का ज्ञान नहीं रखते तो किसी भी क्षेत्र में वे केवल रूटीन कार्य या कॉपी पेस्ट वाले क्ले. रिकल कार्य ही कर पाते हैं। इसलिए तो भारतीय ज्ञान परंपरा के कारण उन्नत भारत प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने, श्मेक इन इण्डियाय के बल पर आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए आज संघर्ष कर रहा है। चूँकि, पुरातन ज्ञान परंपरा भारतीय संस्कृति से निकली थी इस कारण कई घरों या समाज में सम्पूर्ण मानव की बात समय समय पर होती भी रही।

आदर्श रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा

स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद घोष, गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर, महत्मा गाँधी आदि कई शिक्षाविदों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को ही आदर्श मानकर शिक्षा के लक्ष्य निर्धारित किये। पूर्व की दो शिक्षा नीतियों ने भी कई प्रगतिशील सुझाव दिए किन्तु दुर्भाग्य से एकपक्षीय योग्यता के आधार पर नौकरी देने वाली शिक्षा व्यवस्था को नहीं बदल पाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 ऐसे बड़े बदलाव की और कदम बढ़ाने की बात करती है जिसको लागू करने में वही शिक्षक सक्षम होंगे जो अपने आधार और भारतीय संस्कृति पर गर्व कर सकें। वैसे शिक्षक जो घर और समाज से भारतीय ज्ञान परंपरा को आत्मसात की हुई भारतीय संस्कृति से भी जुड़े रहे हों और इस कारण पल भर में रूष्टि से सृष्टिश् को समझने की क्षमता रखते हों। जो छद्म स्वरुप धारण कर विद्वान होने का दंभ न भरें बल्कि प्रत्येक क्षेत्र के विद्यार्थियों में रश्थानीय से वै. श्विकश् समस्या की पहचान और निराकरण करने की क्षमता का विकास कर सकें। एनईपी- 2020 के ऐसे लक्ष्य के साथ शिक्षा प्राप्त करने के बाद जो पीढ़ी निकलेगी वो नौकरी में जाने के बाद प्रत्येक क्षेत्र में भारत को आत्म. निर्भर बनाने के साथ अग्रणी बनाने का प्रयास करेगी न कि अनुसरण करनेवाला बनाएगी। बहुविषयी शिक्षा, संपूर्ण विकास, जड़ से जग तक, मानव से मानवता तक की बात राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समावेशित की गई है।
> देखे P02

रूप से देखते हैं कि छठ पूजा पूरे भारत में मनाई जाती है, जिसमें दिल्ली और मुंबई जैसे प्रमुख शहर और विदेश भी शामिल हैं। यहां त्योहार सूर्य देव की पूजा करने के लिए मनाया जाता है। भक्तों की प्रमुख इच्छाओं में शांति, खुशी और बच्चे हैं। जबकि आदिवासी नेता इस बात से सहमत हैं कि छठ पूजा मनाने वाले आदिवासियों की कोई भी घटना संस्कृतिकरण प्रक्रिया का हिस्सा है, वे इसे कोई बड़ा महत्व नहीं देना पसंद करते हैं। कुछ आदिवासी नेताओं का मानना ​​है कि हिंदू कट्टरपंथी आदिवासियों को ताड़ों बनाने के लिए ऐसा कर रहे हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा जड़ नहीं बल्कि सतत प्रवाह माना है, जिसमें विवेक के उपयोग की स्वतंत्रता है। बदलते सामाजिक परिवेश और भारतीय मूल्यों के बीच हमारी शिक्षा व्यवस्था को समावेशी बनाना आवश्यक हो गया है। यह समावेशी व्यवस्था भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा के बिना नहीं चल सकती है, क्योंकि एक तरफ तो हम आधुनिकता के दौर में झटपट भागे जा रहे हैं। वहीं हमारी संस्कृति में निहित ज्ञान विज्ञान परंपरा को भूलते जा रहे हैं। इस अंधानुरागण में हमारी वही स्थिति हो चुकी है जैसा उपनिषदों में कहा गया है कि यदि दृष्टिहीन को रास्ता दिखाने वाला भी दृष्टिहीन हो तो लक्ष्य कैसे प्राप्त हो सकेगा। भारत की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे देश की पहचान बनती है। अवश्य ही नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परंपरा को एक गत्यात्मक तथा व्यवहारिक जीवन प्रणाली के रूप में प्रस्तुत करते हुए भारत के संरक्षणाती संस्कृति और परंपरा को पुनर्स्थापित करने में सक्षम हो सकेगा।



प्रकृति की गोद में बसा है चुनहेठ जलप्रपात

- विलुप्ति के कगार पर कुंदा किला और चुनहेठ जलप्रपात
- ऐतिहासिक धरोहर और प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण है चतरा का कुंदा प्रखंड
- चुनहेठ जलप्रपात पर्यटकों का मोह रहा मन
- प्रशासनिक उदासीनता के कारण नहीं हो रहा विकास
- जंगल के रास्ते जाने को मजबूर हैं पर्यटक
- मधुमक्खियों की एकता लोगों को दे रही संदेश
- अति संवेदनशील इलाके में है पर्यटन स्थल
- नाईट होल्ड हो सकता है खत-रनाक



चतरा : झारखंड को प्राकृतिक रूप से समृद्ध माना जाता है। इसके 24 जिलों में अलग-अलग धरोहर हैं। जो कि विश्व विख्यात माने जाते हैं। छोटी-बड़ी झीलें, डैम, पहाड़, झरने, मंदिर, मठ और राजाओं के किले लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इन सबों के आस-पास का दृश्य लोगों के मोहता है। झारखंड की धरती पर कई ऐसे धरोहर और प्राकृतिक संपदा हैं। जो विलुप्ति के कगार पर हैं। इन धरोहरों के बारे में न तो आम नागरिकों को जानकारी है और ना ही सत्तासीन राजनेताओं को... झार न्यूज ऐसे ही धरोहर के बारे में आपको बताने जा रहा है... जिसकी गाथा इतिहास के पन्नों में कैद होकर रह गयी है।

नक्सल प्रभावित इलाके में पर्यटन की संभावना

हम बात कर रहे हैं राजधानी रांची से करीब 200 किलोमीटर की दूरी पर स्थित चतरा जिला की चतरा जिला मुख्यालय से लगभग 50 किलोमीटर की दूरी पर झारखण्ड-बिहार की सीमा से सटा कुंदा प्रखण्ड है। जिसे अति संवेदनशील नक्सल प्रभावित क्षेत्र माना जाता है। जहां आम दिनों में आम लोगों को जाने से भी डर लगता

है। इस नक्सल प्रभावित क्षेत्र में कुंदा किला और चुनहेठ जलप्रपात स्थित है। जो कि पर्यटकों से अबतक अछूता है। कुंदा में घने जंगलों के बीच राजा किला है और इसी किला के समीप चुनहेठ जलप्रपात है। लेकिन आम लोगों को इसके संबंध में कोई जानकारी नहीं है। जिसके कारण न तो किसी ने इसके विकास के बारे में सोचा और ना ही इसका कायाकल्प हुआ। इन दिनों नक्सलियों का तांडव कम हुआ है और पर्यटक चुनहेठ जलप्रपात का रुख करने लगे हैं। लेकिन जो सम्मान इस जलप्रपात को मिलना चाहिए, वो अबतक नहीं मिला। स्थानीय लोगों की संस्कृति और परंपरा को जीवित रखने के लिए प्रकृति के उपहार को भी संजना जरूरी है। लेकिन स्थानीय जन प्रतिनिधि और प्रशासन की उदासीनता के कारण समस्या बरकरार है।

प्रशासनिक उदासीनता के कारण नहीं हुआ विकास
पर्यटक प्रखंड मुख्यालय तक तो सहजता से पहुंच जाते हैं। लेकिन राजा किला और जलप्रपात तक पहुंचने के लिए लोगों को काफी मशक्कत करनी पड़ती है। इसके अलावा प्रशासन की उदासीनता ऐसी कि अबतक न तो इसकी तस्वीरें ली गयी हैं और न ही मैपिंग हुई है। जिसके कारण पर्यटक प्रखंड मुख्यालय तक आकर कई बार वापस लौट जाते हैं।

जंगल में सहम जाती हैं सांसें

कुंदा प्रखंड मुख्यालय से पूर्व दिशा की ओर हारुल और कमाल गांव के बीचो-बीच जंगलों के मध्य में चुनहेठ जलप्रपात स्थित है। इस मनोरम दृश्य के अनुभव के लिए लोगों को जंगल के रास्ते पैदल जाना पड़ता है। पेड़-पौधों के बीच से होकर पर्यटकों राजा के किला तक

पहुंचते हैं। फिर चुनहेठ जलप्रपात की ओर रुख करते हैं। जलप्रपात लगभग 30 फीट की ऊंचाई से जल धारा पथरों से टकराते हुए जमीन तक पहुँचती है। यह दृश्य आंखों को सुहावन लगती है। इसके ठीक सामने ही एक ऊंचा चट्टान है, जिसकी ऊंचाई लगभग 100 फिट है। इसके आसपास और भी कई चट्टानें हैं। जिसमें मधुमक्खियों का बसेरा है। मधुमक्खियों की आवाज सुनने में काफी मधुर लगती है और मधु की मीठी सुगंध मन मोह लेती है। प्राकृति की शुद्ध हवा, ऊंचाई से कलकल गिरते झरने, पंछियों की चहचाहट, वादियों में मक्खियों की गुनगुनाहट साफ सुनायी लगती है। हालांकि, यह ऐतिहासिक और पर्यटन स्थल पर पर्यटन विभाग की नजर नहीं पड़ी है। इसके बावजूद पर्यटक दूर-दूर से इस मना-रम दृश्य को देखने के लिए आते हैं। जबकि जलप्रपात

तक पहुंचने के लिए कोई रास्ता नहीं है। लोग भुलभुलैया के रास्ते प्रकृति की वादियों के बीच पहुंचते हैं। प्रकृति और इतिहास से प्रेम करने वाले लोग इस भुलभुलैया में भी रास्ते निकाल लेते हैं। हालांकि लोग अक्सर ऐसी जगहों पर नाईट होल्ड करना चाहते हैं। लेकिन इस क्षेत्र में यह खतरनाक हो सकता है। इसलिए सूर्य ढलने से पहले इस जगह से निकलना सही है।

पर्यटन स्थल के विकास से रोजगार श्रृंखला स्थानीय लोगों की मानें तो इस स्थल को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने पर सिर्फ इसकी शोभा ही नहीं बढ़ेगी। बल्कि स्थानीय लोगों को रोजगार का साधन भी प्राप्त होगा और क्षेत्र की गरीबी दूर होगी। आर्थिक श्रोत में बढ़ोतरी होने से कमाई के कई साधन भी बनेंगे। जिससे देश की अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी।

मनोरम एवं अद्भुत दृश्य सैलानियों को करता है अपनी तरफ आकर्षित

- पहाड़ की ऊंचाइयों से कल-कल गिरता झरना
- पत्थर की ऊंची-ऊंची दीवारें ।
- असंख्य मधुमक्खियों के छत्ते वह मनमोहक सुगंध
- मधुमक्खियों की गुनगुनाहट ।

चुनहेठ का नाम कैसे पड़ा

- बुजुर्ग लोगों का मानना है कि यहां चुना का खान है

कैसे पहुंचे चुनहेठ जलप्रपात

- ऐतिहासिक महादेव मठ से 4 से 5 किलोमीटर पूर्व दिशा की ओर नदियों के सहारे जाया जा सकता है।
- कुंदा अमोना रोड के बीच गुरतुर के समीप से रास्ता के द्वारा जाया जा सकता है हालांकि जाने के लिए कोई खास रास्ता नहीं बनवाया गया है और ना ही किसी प्रकार का बोर्ड लगवाया गया है।

पक्षियों को नहीं लगता करंट लेकिन चमगादड़ों को लग जाता है झटका

रांची : पक्षी आराम से बिजली के तार बैठे रहते हैं, लेकिन उन्हें करंट नहीं लगता। वहीं अगर चमगादड़ लाइट के तार पर बैठता है तो उसे झटके लगने लगते हैं और वह मर भी जाता है। इसके पीछे का विज्ञान क्या कहता है? क्या सच में पक्षियों में कोई जादुई शक्ति होती है। जिस वजह से वे आराम से कहीं भी बिजली के तारों पर लटक जाते हैं। आइए जानते हैं आखिर क्यों पक्षियों को करंट नहीं लगता जबकि चमगादड़ को करंट लग जाता है।

पक्षियों को क्यों नहीं लगता करंट?

आप बचपन से देखते आ रहे होंगे कि पक्षी आराम से बिजली के तार पर बैठे रहते हैं लेकिन उन्हें करंट नहीं लगता है। वे आराम से तार पर बैठ कर मजे करते हैं। इसके पीछे सामान्यज्ञ सा विज्ञान काम करता है। पक्षी केवल एक ही तार पर बैठे रहते हैं। अगर वे दोनों तार को एकसाथ टच कर देते हैं तो उनकी भी मृत्यु हो जाती



है। हालांकि ज्यादातर ऐसा होता नहीं है क्यों कि पक्षी दोनों तार को एकसाथ टच नहीं कर पाते हैं।

चमगादड़ को क्यों लगता है करंट?

चमगादड़ों (तंजे) भी बिजली के तारों पर लटकते हैं।



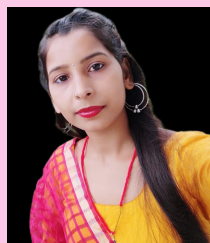
आपने कई बार देखा होगा कि बिजली के झटके से चमगादड़ गिरकर मर जाते हैं, ऐसे में आपने कभी सोचा है कि पक्षियों के साथ ऐसा क्यों नहीं होता? ये पूरा विज्ञान पोजीशन को लेकर रहता है। आपको बता दें कि

चमगादड़ों को भी तबतक करंट नहीं लगता, जबतक वे सर्किट पूरा न कर लें। चमगादड़ तार पर उल्टे लटकते हैं और उनके दो बड़े पंख कई बार गलती से दूसरे तार के संपर्क में आ जाते हैं। इस वजह से उन्हें करंट लग जाता है। चूँकि चमगादड़ तार पर पक्षियों की तरह सीधे नहीं बैठ पाते हैं, ऐसे में जब वे गलती से दो तार को एकसाथ टच कर देते हैं तो उनको झटका लगता है और उनकी मौत हो जाती है।

बिजली का सामान्य सा नियम

बिजली का सर्किट पूरा तब माना जाता है जब दोनों वायर से करंट मिले। ऐसे में इलेक्ट्रॉन आगे नहीं बढ़ते हैं। जैसे केवल एक तार से बल्ब नहीं जलता, पंखा नहीं चलता या टीवी ऑन नहीं होता, लेकिन अगर दूसरा तार जोड़े तो सबकुछ चालू हो जाता है।

कविता कुछ अहसास



❖ नीतू यादव

कलम लिए बैठी हुं शब्दों के खोज में
थके हुए हाथों से बगावत कौन लिखता है
जिंदगी से बेखबर कहावत कौन लिखता है
यहां ख्वाबों को पिरोते इंसान देखा है

फिर टुटते उसके अरमान को देखा है
यादों के साए में जीना अच्छा लगता है
दर्द के साथ मुस्कुराना अच्छा लगता है
बचपन की गलियों में जीए एहसास को
याद करना अच्छा लगता है

फिर से उस गलियों में जाना अच्छा लगता है
अपने अगर अपने ना बने
परायों को अपना बनाना अच्छा लगता है
बंद होठों से हर बात कह जाना अच्छा लगता है

जिंदगी दो चार दिन की मेहमान हैं
इसमें खुशनुमा पलों को हृदय में सजोना अच्छा लगता है
फिर इन एहसास के साथ मर जाना अच्छा लगता है

**झार न्यूज मे विज्ञापन
के लिए संपर्क करें :**
9430397436

Jeevansathi Production

Videography & Photography

Wedding Decoration

Video Mixing, Photo Editing & Album Designing

Live Broadcasting For LED, Facebook, Youtube,web etc



मनपुरन गोस्वामी जी के मिलल 'देबुलाल गोस्वामी कला सम्मान' खोरठा किताब डोंगल चेठा आर आजीक गाँव कर विमोचन

संदीप कुमार महतो

राँची : बालीडीह में श्लुआटीश पत्रिकाक बाटे ले पड़त बछर दिये जाइ वाला श्देबुलाल गोस्वामी कला सम्मान खोरठा के सुप्रसिद्ध खोरठा साहित्यकार आर रइसका मन. पुरन गोस्वामी जी के दियल गेलइ ।

बालीडीह खोरठा कमिटीक अध्यक्ष पंचम महतो आर लुआटीश पत्रिकाक संपादक गिरिधारी गोस्वामी श्लाकाश खूँटीश उनखा के सोल ओढ़ाइ के सम्मान पत्र आर 1111 रूपइया दियल गेल । नामजइजका लोक कलाकार देब. लाल गोस्वामी जीक नामे पड़त बछर खोरठाक एगो कलाकार के ई सम्मान दियल जाहे । एकर पहिले जे कलाकार गुला के मिलल हइन जेकर नाम हे – खोरठाक नामजइजका कलाकार सुकुमार, शिवनंदन पाण्डेय श्गरीब, प्रदीप कुमार दीपक , प्रयाग महतो, आर पंडित श्याम गोस्वामी ।

ई जोखाज खोरठा शोधार्थी संदीप कुमार महतो कर पहिल किताब श्दोंगल चेठा (खोरठा कविता संग्रह) आर एक सउ हिन्दी कविताक खोरठानुवाद श्आजीक गाँव कर विमोचन भेल जेकर में मनुपरन गोस्वामी आर पंचम



महतो जीक हाथ से भेल । रोहित प्रसाद ठाकुर आरो आरो । सरंजाम में जुमल जुटल कलाकार साहित्यकार बाटे ले । जुमल जुटल खोरठा भासा परेमी में श्री सरयू प्रसाद गा. 'स्वामी, डॉ. नागेश्वर महतो , पेंटर श्याम केंवट, राजेंद्र हजाम , रणधिर गोस्वामी आर डॉ पूर्णदु गोस्वामी रहथ ।

लोक आस्था के महापर्व



की सभी दृढ व्रतियों को हार्दिक शुभकामनाएं



कमाय केर जेब भेलो ढीला

महंगाई आर कमाय
दुइयो सोतेला भाय..!
कखनियों पटतो नाय
एगो काने दोसरें खाय..!
जिनीसक दाम बढलो
कमावेवाला ते कानलो
चली रहल हो ते चक्का
टुमटाम ठेल मारें धक्का
देसम देखें आबै रंग रंगीला
कमाय केर जेब भेलो ढीला..!

बुतरु बतराक आसरा
महंगाय मारे हो पैतरा
मोटका हाथें सौतेलका
दुबरका संगें असलका
रोद बतासैं टपके घाम
कामेक चिता भोर साम
डेगाडेंगी चलतो कमाय
सरेंगे उड़े रोज महंगाय
करें तो आइख लाल पीला
कमाय केर जेब भेलो ढीला..!

मुडीमर कुबेर हो भारी
पिसाय रहल हो कमाई
तोर उपजालो कमालो
ते ओकर गोदामे आलो
हुराक दर जिनिश तोर
कीनेक टेमे ढरढर लोर
जुटें कमाय बैर बिसराय
ढाहें दलान कुबेरक भाय
फाल्गुनी तोरा हांक दिला
कमाय केर जेब भेलो ढीला..!



फाल्गुनी मरीक कुशवाहा

भात भेलइ गीला

भउजी हेरल ढीला
भात भेलइ गीला
सास देलइ गारी
कहाँ गेले गे मंगजारी ।

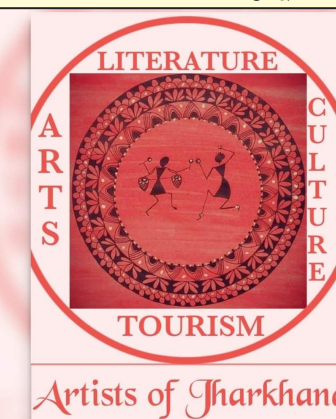
तोर दहिया में लाज नाज
बिहाने-पराते कोन्हो काज नाज
गडले तोर दिन जितो
ढीला हेरले किना ढोढर भोरतो ।

एतने में भउजी छमइक गेल
सास के धरी के झोटीयाइ लेल
फोन करी के काइंद-काइंद
बाप- भाय के हकाई लेल ।

बाप-भाय के सामने
अब नाज सुनबो ई राडी के गरिया
आर नाज देखबो ई थथुना करिया
आब हमें बसबो बपा के बरिया ।।



रंजीत प्रजापति बडकी पुन्नु(बोकारो)



भरसटाचार

माये-बापे पढाइ-लिखाइ के,
तोरा ऑफिसर बनाइ देलो ।
आइझ देइख के लागो हइ कि,
सोबले बोडो गुनहा करलो ।

घुस माँगे में लागलो नाइ तनिको शरम,
मुहँ खोइलके माँगे हे तोज ।
बेच देलही आपन इमान आर धरम,
कि एगदमें बइन गेल हे तोज बेशरम ।

लाखो-करोड़ों धन लुइटके,
बइन गेलहे तोज माले-माल ।
पइड गेल हे तोज इ.डी. के चक्कर मे,
आब चक्की पिसिहें तोज जेल में,
आर खुब खिचडी खइहें सेल में ।

बेस रहतलो तोज ईमान से काम करतले,
आपन तनखा से राज करतले ।
सोभेक दुलारा,आँखिक तारा रहतले,
आपन गाँव-समाज में नाम करतले ।

शायद ! भुइल गेले तोज बचपन के ऊ दिन,
एक खेचा रोटी खातिर टुकुर-टुकुर भाले हलें ।
ककरो हाथें देखले कोन्हो,
तोज खुभे रोदना पसारे हलें ।

याइद कर तनि ऊ दिन,जब तोर बापें,
आपन पेट काइट के,खुइन-पसीना बोहाइके
मेहनत-मजूरी कइरके तोरा खुब पइइलो,
आब कहिया चुकइबे तोज
आपन माय-बापेक ऊ रिन ।
आब कहिया चुकइबे तोज
आपन माय-बापेक ऊ रिन ।।



ताराचंद महतो

पढ़ाई

छउवे घरी लेल पीछा
तखने ले परेसान ही
ई कधिया सिरयतय
ओकरे आसे लागल ही ।

कतेक दिन से झोला उठवली
हांथे मुडें आरो बेगे टांगल ही
मगजेक बोझा कधिया हटतय
ओकरे आसे लागल ही ।

कतना गाइर माइर के सहली
रइट रइट के माथा पागल ही
कधिया एकर फल पाइबय
ओकरे आसे लागल ही ।

छउवा ले जुवान तक पाइली
घार छोइइ परदेस भागल ही
कधिया जे घार घुरबय
ओकरे आसे लागल ही ।

कतेक बोड़ बोड़ परीछा लिखली
छोट परीछाव नाइ पास करल ही
आपन गोड़े कधिया जे डड़ाइबय
ओकरे आसे लागल ही ।

जंदे जांय तंदे एकरे चवय चुगली
छोट बोड़ सभेक एके सुनल ही
सरकारेक वेकेसी कधिया से अइतय
ओकरे आसे लागल ही ।

बिहा सादीक अइसने तलतली
उमर बितल जाइ रहल ही
कधिया जे नावा बिहान भेतय
ओकरे आसे लागल ही ।।



मानिक कुमार खोरठा शोधार्थी
राँची विश्वविद्यालय राँची ।